MA. 1st Sem.

Total number of printed pages–10

14 (HIN–1) 1016

2021

(Held in 2022)

HINDI

Paper : HIN–1016

(New Syllabus & Old Syllabus)

(Aadikālīn evang Bhaktikālīn Kāvya and Madhyakālīn Kāvya–I)

(आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य और मध्यकालीन काव्य–I)

Full Marks : 64

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

New Syllabus

(आदिकलीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

1. सही विकल्प का चयन करके निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) कवि सरहपा का अन्य एक नाम है —

(i) श्रीभद्र

(ii) राहुलभद्र

Contd.

(iii) सरोजभद्र

(iv) वज्रभद्र

(ख) "अदेषि देषिबा देषि बिचारिबा" — में 'अदेषि' शब्द का तात्पर्य क्या है?

(i) परब्रह्म

(ii) आत्मा

(iii) मन

(iv) अदृश्य धन

(ग) "कहौं कमध कहौं ..... । कहौ कर चरन अंत रुरि।।" — इस काव्य-पंक्ति के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए सही शब्द है —

(i) कंध

(ii) हथ्थ

(iii) मथ्थ

(iv) दन्त

(घ) विद्यापति की रचना नहीं है —

(i) भूपरिक्रमा

(ii) पुरुष परीक्षा

(iii) वर्षकृत्य

(iv) श्रावकाचार

(ङ) "जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल चाँद बिहुत सब तारा।।" — प्रस्तुत काव्य-पँक्ति में किस अलंकार की योजना हुई है?

(i) उपमा

(ii) उत्प्रेक्षा

(iii) यथासंख्य

(iv) अपह्नुति

(च) "दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई।" — इस काव्य-पंक्ति में प्रयुक्त 'अँगिया' शब्द का आशय है —

(i) चुनरी

(ii) अंग-वस्त्र

(iii) शरीर

(iv) आँगन

(छ) "सूरदास मोहि निमिष न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत।।" — इस काव्य-पंक्ति का संबंध किस रस से है?

(i) शान्त

(ii) श्रृंगार

(iii) वात्सल्य

(iv) शान्त

(ज) 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के अनुसार सूरदास के जन्म-स्थान का नाम है —

(i) सीही

(ii) ब्रज

(iii) गऊघाट

(iv) पारसोली

(झ) "रहेउ एक दिन अवधि अधारा।' — यह सोच किसके मन में उदित हुआ था?

(i) अयोध्यावासी

(ii) भरत

(iii) कौशल्या

(iv) वसिष्ठ

(ञ) जनश्रुति के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास के पिता कौन थे?

(i) रामेश्वर दूबे

(ii) नरहरिदास

(iii) आत्माराम दूबे

(iv) दीनबंधु पाठक

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×7=14

(क) "अन्धें अन्ध कढ़ावइ तिम वेण्ण वि कूव पड़ेइ।।" — प्रस्तुत काव्य-पंक्ति का आशय बताइए।

(ख) "ते पद जांनां बिरला जोगी दुनी सब धंधै लाई।" — यहाँ बिरले योगी और दुनिया के बारे में कवि ने क्या-क्या कहा है?

(ग) "लै चल्यौ सितावी करी फारि फौजं।" — कौन शत्रु-सेना को विदीर्ण कर किसको लेकर शीघ्रता से चले?

(घ) "जिनकर एहनि सोहागिनि सजनि गे पाओल पदारथ चारि।।" — चारों पदार्थों की प्राप्ति की बात यहाँ किस प्रसंग में हो रही है?

(ङ) "लोका मति के भोरा रे।" — कबीरदास ने क्यों ऐसा कहा है?

(च) "आयो घोष बड़ो ब्योपारी।" — गोपियों ने किसलिए ऐसी उलाहना दी है?

(छ) "कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका।" — ब्राह्मणों ने कोमल वचन से क्या-क्या कहा?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं दो*** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×2=10

(क) गोरखनाथ-विरचित पठित सबदियों के आधार पर नाथ-पंथी साधना के स्वरूप पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

(ख) 'खने-खने नयन कोन अनुसरई।' —पंक्ति से शुरू होनेवाले पद के आधार पर विद्यापति के वय:संधि वर्णन के सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

(ग) गोपियों ने उद्धव के योग-संदेश को क्यों ठुकरा दिया था?

(घ) "राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत।।"
— प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों के काव्य-सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

4. निम्नलिखित अवतरणों में से ***किसी एक*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(क) जहि मण पवण ण संचरइ रवि ससि णाह पवेस।
तहि वढ़ चित्त विसाम करु सरहें कहिअ उएस।।
आइ ण अन्त ण मज्झ णउ णउ भव णउ णिव्वाण।
एहु सो परममहासुह णउ पर णउ अप्पाण।।

(ख) चढ़िय राज प्रथिराज। छाड़ि साहाबदीन सुर।।
त्रिपत सूर सामंत। बजत नीसाँन गजत धुर।।
चंद्र वदनि मृग नयनि। कलस ले सिर सनमुष्ष जुष।।
कनक थार आरति बनाय। मोतिन बँधाय मुष।।
मंडल मयंक वर नारि सब। आनँद कंठह गाइयव।।
ढोरंत चवर किक्कर करहि। मुकुट सीस तिक जु दियव।।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं दो*** के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×2=20

(क) कविवर विद्यापति की श्रृंगार-भावना पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

(ख) कबीर-काव्य की लोकप्रियता के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

(ग) सूर-काव्य के कलापक्षीय सौन्दर्य का सोदाहरण आकलन कीजिए।

(घ) गोस्वामी तुलसीदास के राम के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए 'रामचरितमानस' के 'उत्तरकाण्ड' के महत्व पर चर्चा कीजिए।

Old Syllabus

(मध्यकालीन काव्य–I)

1. निम्नलिखित अवतरणों में से ***किन्हीं दो*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) ए सखि–रंगिनि कहल निसान।
हेरइत पुनि मोर हरल गियान।।
कवि विद्यापति एह रस भान।
सुपुरुख मरम तुहू भल जान।।

(ख) संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँणीं, माया रहै न बाँधी।।
हित चित की द्वै थूँनीं गिराँनीं, मोह बलींडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँनि परी धर ऊपरि, कुबधि का भाँडा फूटा।।

(ग) ऊधौ कही सु फेरि न कहिऐ।
जौ तुम हमैं जिवायौ चाहत, अनबोले ह्वै रहिऐ।
प्रान हमारे घात होत है, तुम्हरे भाऐं हाँसी।
या जीवन तैं भरन भलौ है, करवट लैहैं कासी।

(घ) माधवजू, मोसम मन्द न कोऊ।
जद्यपि मीन–पतंग हीनमति, मोहि नहिं पूजैं ओऊ।।
रूचिर रूप–आहार–बस्य उन्ह, पावक लोह न जान्यो।
देखत बिपति बिषय न तजत हौं, ताते अधिक अमान्यो।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं तीन*** के सम्यक् उत्तर दीजिए : 12×3=36

(क) विद्यापति की पदावली के प्रतिपाद्य की समीक्षा कीजिए।

अथवा

भाषा–शैली की दृष्टि से विद्यापति की पदावली पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

(ख) महात्मा कबीरदास के मानवतावादी दृष्टिकोण पर उदाहरण–सहित चर्चा कीजिए।

अथवा

"कबीर वाणी के डिक्टेटर थे।" — इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।

(ग) ज्ञान–योग पर प्रेम–भक्ति की विजय की दृष्टि से 'सुरसागर' के 'उद्धव–सन्देश' प्रसंग की समीक्षा कीजिए।

अथवा

पठित पदों के आधार पर सूरदास–विरचित विनय के पदों के महत्व का आकलन कीजिए।

(घ) 'विनय–पत्रिका' के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति–भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'विनय-पत्रिका' के कलापक्षीय सौन्दर्य पर सोदाहरण विचार कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं तीन*** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 4×3=12

(क) कविवर विद्यापति को क्यों 'मैथिल कोकिल' कहा जाता है ?

(ख) 'टुटइत नहिं टूट पेम अदभूत। जइसन बढ़इ मृनालक सूत।।' — इस काव्य पंक्ति के भाव एवं कलापक्षीय सौन्दर्य का खुलासा कीजिए।

(ग) 'हंम तौ एक एक करि जांनां।' — सन्त कबीरदास ने क्यों ऐसा कहा है?

(घ) हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य-विधायक के रूप में कबीरदास का परिचय दीजिए।

(ङ) सूरदास की काव्य-भाषा पर एक टिप्पणी लिखिए।

(च) 'ऐसी मूढ़ता या मनकी।' — कवि ने मन की मूर्खता के बारे में क्या-क्या कहा है?